RESEARCH PAPER

Research Review Journal of Social Science
e-ISSN: 2583-2867 | Vol-03 | No-02 | Jul-Dec 2023 | pp. 20-24
*Double-Blind Peer Reviewed/ Refereed Bi-annual Journal*

# The eternal concept of Vasudhaiva Kutumbakam: With special reference to India-Nepal relations

## वसुधैव कुटुम्बकम् की सनातन अवधारणाः भारत नेपाल सम्बन्धों के विशेष सन्दर्भ में

*[1]Sachin Tiwari and [2]Dr Hemant Kumar Malviya

*[1]Research Scholar, department of Political science, Banaras Hindu University-221005*
*[2]Professor, Department of Political science, Banaras Hindu University-221005*

**Abstract**

*Anay Ninja Paroveti Ganana Laghuchetsam*
*Udacharitaanam tu Vasudhaiva Kutumbakam*

*This aphorism mentioned in the 17th verse of Chapter 4 of Mahopanishad is the cornerstone of Indian culture and values. Indian states have been using this concept of Sanatan culture for a long time in their extra-state relations. This motto of Sanatan Sanskriti has also played an important place in the relations with Nepal, India's closest neighbor and which has immense connection with Indian values of life since time immemorial. Nepal, surrounded by natural beauty in the Himalayan valleys, has had cultural historical relations with India for centuries. Due to common culture, uniformity of language and script and socio-political proximity, the brotherly feeling is clearly reflected in India-Nepal relations. Since ancient times, Nepal has been so intertwined with Indian values of life that the vision of the scenario of cultural India cannot be complete without Nepal. Through this article, we will mainly explore the historical cultural relations between India and Nepal, which inspire both the countries to learn from their glorious past and carry on relations with new energy in the present scenario.*

**Keywords:** *Vasudhaiva Kutumbakam, cultural, historical, India, Nepal, siblings*

**Abstract in Hindi Language**

अंय निंज परोवेति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

महोपनिषद् के अध्याय चार के 17वें श्लोक में वर्णित यह सूक्ति भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के आधार स्तम्भ है। सनातन संस्कृति की इसी अवधारणा का प्रयोग चिरकाल से भारतीय राज्य अपने राज्येत्तर सम्बन्धों में करते आ रहे है। भारत के सबसे निकटतम पड़ोसी एवं अनादिकाल से भारतीय जीवन मूल्यों के साथ असीम जुड़ाव रखने वाले नेपाल के साथ सम्बन्धों में भी सनातन संस्कृति के इस आदर्श वाक्य का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हिमालय की वादियों में प्राकृतिक सौन्दर्य से घिरे नेपाल का भारत के साथ सदियों से संस्कृतिक ऐतिहासिक सम्बन्ध रहा है। साझी संस्कृति, भाषा एवं लिपि की एकरूपता सामाजिक राजनीतिक सन्निकट्ता के कारण भारत नेपाल सम्बन्ध में सहोदर भाव स्पटतः परिलक्षित होता है। प्राचीन समय से ही भारतीय जीवन मूल्यों के साथ नेपाल इस तरह अन्र्तनीहित रहा है कि सांस्कृतिक भारत के परिदृश्य की परिकल्पना नेपाल के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। इस लेख के माध्यम से हम मुख्यतः भारत नेपाल के मध्य के ऐतिहासिक सांस्कृतिक सम्बन्धों का अन्वेषण करेंगे, जो दोनों देशों को अपने गौरवमयी अतीत से सीखने एवं वर्तमान परिदृश्य में नई ऊर्जा के साथ सम्बन्ध निर्वहन की प्रेरणा प्रदान करते है।

**Keywords:** वसुधैव कुटुम्बकम्, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भारत, नेपाल, सहोदर।

**Article Publication**

Published Online: 31-Dec-2023

***Author's Correspondence**

Sachin Tiwari

Research Scholar, department of Political science, Banaras Hindu University-221005

sachintiwari1369@gmail.com

*10.31305/rrjss.2023.v03.n02.004*

© 2023 The Authors. Published by Research Review Journal of Social Science. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

**Scan and Access Article Online**

**प्रस्तावना :**

भारत नेपाल के मध्य सम्बन्धों की ऐतिहासिकता पर दृष्टि डाले तो यह हमे प्राग्रऐतिहासिक काल के दृष्टिगोचर होते है। जब हम सांस्कृतिक भारत की बात करते है जिसमें आज के उत्तरी अफगानिस्तान में बंक्षु नदी घाटी (बाह्लीक) से लेकर दक्षिण में सेतुबन्ध रामेश्वरम् तक समाहित था, उसमें हिमालयांचल में स्थित नेपाल के बिना भारत का सांस्कृतिक मानचित्र पूरा नहीं हो सकता। स्कन्दपुराण में भारत के 9 खण्ड तथा 72 विभेद बताए गये है दिनेश चन्द्र सरकारन ने इनमें से जिन 25 क्षेत्रों का उल्लेख किया है उसकी शुरूवात नेपाल के एक लाख गांवों से होती है। पौराणिक ग्रन्थ पशुपति पुराण की माने तो महर्षि नेमि द्वारा संरक्षित हिमालय के मध्य में स्थित देश नेपाल कहा जाता है, नेमि मुनि जिन्होने अपनी पवित्र साधना वाद्यमति एवं केशवती (विष्णुवती) नदी के संगम पर की थी। नेमि मुनि ने ही गोपाल मुखिया के पुत्र भाक्तमान को राजा बनाया जिसने अगले 28 वर्षों तक नेपाल पर राज्य किया। नेपाल महामात्य एवं हिमवंत खण्ड के अनुसार नेपाल के पशुपति नाथ मन्दिर का निर्माण भगवान शिव के काशी छोड़ काठमांडू में बागमती नदी के तट पर चतुर्मुख लिंग के रूप में अवतरित होने से हुआ।

इस लेख के माध्यम से हम भारत नेपाल के मध्य के इतिहास के विभिन्न कालखण्डों के दौरान विद्यमान रहे उन ऐतिहासिक सांस्कृतिक सम्बन्धों का अन्वेषण करेंगे जो दोनों पड़ोसी देशो को अपने गौरवमयी अतीत से सीखने एवं वर्तमान परिदृश्य में नई ऊर्जा के साथ सम्बन्ध निर्वहन की प्रेरणा प्रदान करते है। इस लेख में रामायण, माहभारत एवं बौद्ध साहित्यों में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर भारत–नेपाल की तत्कालीन राजनितिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्यों एवं नेपाल के प्राचीन राजवंशों एवं भारत के मध्य के सम्बन्धों की विवेचना करेंगे।

**शोध प्रविधि :**

यह अध्ययन द्वितीयक स्रातो के माध्यम से किया गया है आंकड़े एकत्रित करने के लिए विभिन्न किताबों, लेखों, शोध पत्रों आदि का उपयोग किया गया है इस शोध पत्र में व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है?

**रामायण एवं महाभारत कालीन भारत–नेपाल सम्बन्ध :**

ऐतिहासिक एवं पौराणिक ग्रन्थों में यह साक्ष्य मिलते हैं कि नेपाल की पवित्र समृद्ध भूमि को सतयुग में सत्यवती (जैम संदक वि जतनजी) त्रेता युग में तपोवन (जैम संदक वि च्दंबम) तथा द्वापर युग में मुक्तिसोपन (जैम संदक वि सअंजपवद) कहा जाता था। त्रेता युग में अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम का विवाह नेपाल में स्थित मिथिला की राजकुमारी सीता के साथ हुआ था। राम ने जिस पिनाक धनुष को तोड़कर सीता से शादी की थी उसके अवशेष आज भी नेपाल के धनुषा जिले में पत्थर के रूप में मौजूद है। जिसकी पूजा त्रेता युग से आजतक अनवरत चली आ रही है। सीता स्वंयवर में नेपाल का शासक सुगन्धा भी शामिल हुआ था। नेपाल में स्थित हनुमन्ते नामक नदी के तट पर हिमालय से संजीवनी बूटी लेकर निकले हनुमान जी के विश्राम करने के प्रमाण मिलते है।वहां आज भी रामघाट, हनुमानघाट नामक नदी घाट तथा राम एवं हनुमान के मन्दिर है। पौराणिक कथाओं के अनुसार शिवभक्त बाणासुर का राज्य नेपाल में था। बाणासुर की रक्षा हेतु भगवान शंकर का श्री कृष्ण से युद्ध होने के साक्ष्य मिलते है। श्री कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न द्वारा स्थापित यादवेश्वर प्रधुम्नेश्वर शिवमंदिर आज भी नेपाल में मौजूद है। जनकपुर से 32 किलोमीटर पर स्थित रामधुनी में गुरू विश्वामित्र द्वारा किए गये यज्ञ कुण्ड से आज भी धुआं निकलता रहता है। महाभारत काल के अंगदेश (भागलपुर) के राजा कर्ण के नेपाल विजय के सन्दर्भ मिलते है महाभारत के वनपर्व के अध्याय 254 के अनुसार –

प्रययौ च दिशः सर्वान् नृपतीन् वशमानयत्,
स हैमवतिकाञजित्वा करं सर्वानदयात्।
नेपाल विषये ये च राजानस्तानवाजयत्,

अवतीर्थ तत् शैलात्–पूर्वा दिशमभिद्रुतः।।

अर्थात् जहाँ से समस्त दिशाओं में जाकर कर्ण ने सब राजाओं को अपने आधीन किया और हिमालय के सभी भूपालों को जीतकर उसने सभी से कर प्राप्त किया। उसके पश्चात नेपाल के राजा को हराकर पूर्व दिशा की ओर कूच किया। कूरूक्षेत्र के युद्ध में मल्ल, विराट विदेह आदि राजाओं ने पाण्डवों की तरफ से युद्ध लड़ा था। किरात शासक जितेन्द्र यस्ति एवं अलम्बर ने पाण्डओं की मदद की थी। एक पौराणिक कथा के अनुसार नेपाल में स्थित पशुपतिनाथ मन्दिर का सम्बन्ध भी महाभारत काल से है। पाण्डवों के स्वर्गप्रयाण के समय जब भगवान शंकर उन्हे बैल के रूप में दर्शन देने के बाद समाहित होने लगे तो भीम ने पीछे से उनकी पूंछ पकड़ ली, जिससे उनके शरीर का पिछला भाग केदारनाथ ज्योर्तिलिंग के तौर पर और शरीर का ऊपरी हिस्सा पशुपतिनाथ ज्यार्तिलिंग के रूप में नेपाल के काठमांडू में प्रगट हुआ। महाभारत के वनपर्व में वर्णित है कि भीम द्रौपदी के लिए पुष्पका की खोज में नेपाल में हिमालय की उपत्यकाओं में घूमे थे।

## महात्मा बुद्ध एवं बौद्ध साहित्यों में भारत नेपाल सम्बन्ध :

बौद्ध धर्म के सस्थापक भगावन बुद्ध का जन्म नेपाल में स्थित कपिलवस्तु, लुम्बिनी में हुआ था। लुम्बिनी में भारत के सम्राट अशोक द्वारा स्थापित अशोक स्तम्भ भी है। जिस पर प्राकृति भाषा में लुम्बिनी में बुद्ध के जन्म के विषय में लिखा है। चीनी यात्री फ्राह्यान ने भी अपनी यात्रा वृतांत में अशोक स्तम्भ के लुम्बिनी अवस्थित होने की बात कही है। स्वयंभू पुराण एवं स्कन्दपुराण के नेपाल महामात्य से पता चलता है कि स्वयं बुद्ध भारत भूमि पर ज्ञान प्राप्ति के बाद नेपाल गये थे और बुद्ध उपदेश के श्रवण के बाद किरातवंशीय शासक जितेदास्ती बौद्ध हो गये थे। काठमांडु के पश्चिम में स्थित नमुरा नामक स्थान पर शुच्छाग्र नामक स्तूप अवस्थित है, यहाँ बुद्ध के निवास करने की मान्यता है तथा इस स्तूप के बुद्ध की नेपाल यात्रा के सन्दर्भ में देखा जाता है। तथागत बुद्ध ने लुम्बिनी के विषय में कहा था कि यह वह स्थान है जहाँ तथागत का जन्म हुआ था, ये ऐसा स्थान है जहाँ आस्था रखने वाले व्यक्ति को जाना एवं देखना चाहिए। बौद्ध ग्रन्ध महापरिमिब्बानसुत ने नेपाली लिच्छवियों को मूलरूप से भारत के वैशाली का बताया है। डॉ0 काशीप्रसाद जायसवाल ने किरातवशीय शासक स्थुङ्को के समय अशोक का अपनी पुत्री चारूमती के साथ नेपाल यात्रा का वर्णन किया है। अशोक के शासन काल के 14वें वर्ष 249 ई0 पू0 के निग्लीव गौणस्तम्भ एवं 20वें वर्ष 255 ई0 पू0 के रूम्मिनदेई अभिलेख नेपाल से प्राप्त हुए है। अशोक का अनुसरण करते हुए नेपाल शासक महेन्द्र ने भी लुम्बिनी में महेन्द्र स्तम्भ का निर्माण करवाया था।

## प्राचीन नेपाली राजवंश एवं भारत :

नेपाली राजवंश की वंशावलियों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि गोपाल वंश, अभीर वंश, नेमिष एवं लिच्छवी वंश के शासन के समय भारत नेपाल सम्बन्ध प्रागाढ़ रहे थे। गोपाल वंश के शासक भाक्तमान के समय ही नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर के स्थापित होने की मान्यता है। गोपाल वंश के अन्तिम शासक यक्षगुप्त के निःसंतान मरने पर भारत से आये वरसिंह नामक एक व्यक्ति ने नेपाल पर अधिकार कर अभीर राजवंश की नींव डाली थी। अभीर राजवंश के अन्तिम शासक को किरातो ने, जिनका वर्णन भारतीय साहित्य पुराणों वेदों में वनवासी जाति के रूप में आया है ने हराकर अपने राजवंश की नींव डाली थी। किरातों के ध्वज पर सूर्य हिमालय एवं धनुष बाण अंकित होता था जो उन्हे सूर्यवंशी हिमालयी व धर्मानुयायी होना प्रमाणिक करता है। नेपाल में किरात वंश की समाप्ति के बाद चन्द्रवंशी राजा निमिष ने जिस राज्य की स्थापना की उसी वंश के राजा पशुप्रक्ष ने पशुपति नाथ मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिए काशी से ईंटो को मंगवाया तथा उसी ने भारत से चारों वर्णों के हिन्दुओं को नेपाल में लाकर बसाया। पशुपति नाथ मन्दिर में नन्दी के समीप स्थिति शिलालेख के अनुसार लिच्छवियों के पूर्व नेपाल में शाक्यवंशीय राजाओं की 23 पीढ़ियों ने शासन किया। लिच्छवियों का शासन 6वीं ई0 पू0 वैशाली में था, मगध के हर्यकवंशी शासक अजातशत्रु ने वैशाली पर आक्रमण करके लिच्छविों को वैशाली से भागकर नेपाल जाने के लिए विवश किया। मनुस्तृति

में लिच्छवियों को व्रात्यक्षत्रिय (वैदिक क्रिया क्रम में विश्वास न रखने वाला) कहा गया है। बुद्धघोष द्वारा युद्रदकपाठ पर लिखित परमत्थजोटिका नामक टीका में इन्हे बनारस की एक रानी के गर्भ से उत्पन्न माना गया है। कुषाण काल के कुछ सिक्के जो नेपाल से प्राप्त हुए है, के अध्ययन से यह पता चलता है कि कुषाण शासकों ने नेपाल पर अपना आधिपत्य जमाने की कोशिस की थी और नेपाल से व्यापारिक सम्बन्ध बनाए थे। भारत में गुप्त साम्राज्य के अभ्युत्थान का नेपाल पर गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है, उस समय नेपाल राजनीतिक दृष्टि से गुप्त साम्राज्य का हिस्सा होने के साथ भारत के शासन शैली, भाषा, संस्कृति रहन–सहन आदि के साथ भी निकटता के साथ जुड़ा हुआ था। समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति जिसमें उन्होने स्वयं को लिच्छर्विदैहित्र कहा है, से यहां जानकारी मिलती है कि गुप्त वंश के चन्द्रगुप्त प्रथम का विवाह लिच्छवी कुमारी कुमारदेवी के साथ सम्पन्न हुआ था। जो वृषदेव की पुत्री थी प्रयाग प्रशस्ति से नेपाल की समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार करने के प्रमाण मिलते है।

(समतल डवाक – कामरूप – नेपाल – कर्तृपुरादि नृपतिभिः)

चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय का साम्राज्य उत्तर भारत में हिमालय की तलहटी तक फैला हुआ था। लिच्छवी राजवंश के चंगुनारायण अभिलेख (464 ई0) से ज्ञात होत है कि गुप्त साम्राज्य की शक्ति कम होने के उपरान्त मनदेव ने स्वयं को पूरी तरह स्वतंत्र घोषित कर दिया था। मनदेव द्वारा 466 ई0 वी में स्थापित एक शिवलिंग लाजनपाट नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। राजा मानदेव द्वारा ही 467 ई0 में स्थापित विष्णु की विक्रान्त स्वरूप प्रतिमा एवं 491 ई0 में स्थापित एक और शिवलिंग के साक्ष्य मिलते है। 6वीं शताब्दी के प्राप्त अभिलेखों से नेपाल के विषय में ज्ञात होता है। वसन्तदेव के तिस्तुंग अभिलेख तथा उसी क्षेत्र से प्राप्त दो अन्य अभिलेखों से नेपाल के ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते है ये सभी अभिलेख 'स्वास्ति नेपोलेभ्य' से प्रारम्भ होते है जिसका अर्थ है 'नेपाली जनों का कल्याण हो'। लिच्छवी नरेश शिवदेव द्वितीय की शादी मौखरिकुल के भोगवर्मा की पुत्री वत्सदेवी के साथ हुयी थी। जयदेव की शादी कामरूप के नरेश हर्षदेश की पुत्री राज्यमती के साथ हुयी थी। लिच्छवी शासक जयदेवन ने नेपाल को नेपाल मण्डल की संज्ञा दी है तो अन्य नेपाली राजाओं ने नेपाल को भुक्ति (अधीनस्थ राज्य) कहा है। 7वीं शताब्दी में नेपाल में अशुंवर्मन का शासन था। अशुवर्मन के पुत्र उदयदेव से उसके छोटे भाई मानदेव द्वितीय ने सत्ता प्राप्त कर ली थी। इसके उपरान्त तिब्बत की सहायता से उदयदेव के पुत्र नरेन्द्रदेव ने पुनः सत्ता प्राप्त की। इस सहायता का मूल्य पहली बार नेपाल को तिब्बत की अधीनता स्वीकार करके देना पड़ा।

## निष्कर्ष :

भारत एवं नेपाल एक प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता को साझा करते है दोनों देशों के मध्य जीवन के प्रत्येक स्तर पर एक विराट समानता दिखाई पड़ती है नेपाली जन अपने दैनिक जीवन में वाल्मीकी रामायण, रामचरितमानस एवं भानुभक्त रचित रामायण का पाठ करते है। भारत भूमि नेपाली हिन्दुओं की तीर्थस्थल है। बड़ी संख्या में नेपाली नागरिक काशी मथुरा अयोध्या आदि तीर्थस्थलों के दर्शन के हेतु भारत आते है नेपाल में स्थित पशुपतिनाथ एवं मनोकामना देवी मन्दिर हर भारतीय के लिए श्रद्धा का प्रमुख स्थल है। भारतीय धार्मिक तथा पौराणिक ग्रन्थों, पतंजलि के महाभाष्य, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, पाणिनी के अष्टाध्यायी के अध्ययन से भारत नेपाल के मध्य के सतत् सांस्कृतिक प्रवाह का ज्ञान होता है। दोनो देशों के मध्य की सदियों पुरानी सांस्कृतिक धार्मिक परम्पराएं आज भी सजीव अवस्था में है। काशी के विश्वनाथ मंदिर के लिए कस्तूरी नेपाल तो नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर के लिए चन्दन भारत द्वारा उपहार स्वरूप एक दूसरे को प्रदान किये जाते है। दोनो देशों के सामान्य जनमानस के मध्य सदियों से घनिष्ठ भाषा साम्य, स्वरूप स्वभाव की एकता तथा रक्त सम्बन्ध बना हुआ है। जो भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को परिलक्षित करती है। दोनों देशों के मध्य की यह सांस्कृतिक ऐतिहासिक सन्निकटता दोनों की इस स्थिति में लाकर खड़ी करती है कि वे एक दूसरे के सहअस्तित्व एवं सहयोग के बिना भविष्य की कल्पना ही

नहीं कर सकते। दोनों का इतिहास इस तरह एक दूसरे से जुड़ा हुआ है कि अलग–अलग राष्ट्र होकर भी दोनो एक वृहत्तर परिवार का निर्माण करते है।

## सन्दर्भ सूची :


[1] भण्डारी दुण्ढ़राज, नेपाल की ऐतिहासिक विवेचना।

[2] शर्मा बालचन्द्र, नेपाल की ऐतिहासिक रूपरेखा।

[3] मजूमदार, आर0 सी0, एंशिएण्ट नेपाल, पृष्ठ सं0 373, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली, 1952।

[4] मजूमदार, आर0 सी0, ऐशियण्ट इंडिया, पृष्ठ 374।

[5] जयसवाल, के0 पी0, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृष्ठ 82–84।

[6] डॉ0 शर्मा, आर0 पी0, मिथिला का इतिहास, पृ0 414।

[7] रेग्मी, डी0 आर0, ऐशिएंण्ट एण्ड मेडाइवल नेपाल, पृ0 144–146।

[8] जयसवाल, के0 पी0, क्रोनोलॉजी ऑफ नेपाल, पृ0 81, भारती।

[9] राइट, डी0, हिस्ट्री ऑफ नेपाल, कास्मो प्रकाशन पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

[10] जर्नल ऑफ द बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, वाल्यूम 22, पृ0 204, 256।

[11] जर्नल ऑफ द बाम्बे ब्रान्च ऑफ दि रियल ऐसियाटिक सोसाइटी, वाल्यूम नं0 11, पृ0 268।

[12] सरकार, डी0सी0, सेलेक्ट इंस्क्रिफशंस, समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति, पृ0 267

[13] डेविड, आर, डायलागस ऑफ दि बुद्धा, भाग–2, पृ0 187।

[14] शाह डी0के0, भारत नेपाल के मध्य सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

[15] अग्रवाल, कृष्ण देव, नेपाली संस्कृत अभिलेखों, का हिन्दी अनुवाद, दिल्ली 1985।

[16] रेग्मी, जगदीश चन्द्र शर्मा, लिच्छवि संस्कृति।

[17] गोयल, श्रीराम, प्राचीन नेपाल का राजनीतिक एवं संस्कृतिक इतिहास, 1973।



**Author's Biography:**

***Sachin Tiwari*** *is a research scholar in the Department of Political Science Banaras Hindu University, India. He has received his Bachelor of Arts in political science from Dr RMLU Ayodhya, Master's degree from Banaras Hindu University in political science. His research area is international relations, focused specially on India's relation with neighbouring countries. He has published several articles in this field.*

***Dr Hemant Kumar Malviya*** *is a distinguished and prominent figure in the field of international relations. Currently hi is serving as faculty member in the department of political science, Banaras Hindu University.He has published more than 30 research papers in the field of international relations.*



**How to Cite this Article?**

Tiwari, S., & Malviya, H. K. (2023). The eternal concept of Vasudhaiva Kutumbakam: With special reference to India-Nepal relations: **वसुधैव कुटुम्बकम् की सनातन अवधारणाः भारत नेपाल सम्बन्धों के विशेष सन्दर्भ में**. *Research Review Journal of Social Science*, *3*(02), 20–24. https://doi.org/10.31305/rrjss.2023.v03.n02.004